गोविंद दामोदर माधवेति स्तोत्र

अग्रे कुरूनाम् अथ पाण्डवानां दुःशासनेनाहृत वस्त्रकेशा ।
कृष्णा तदाक्रोशदनन्यनाथ गोविंद दामोदर माधवेति॥

जिस समय कौरव और पाण्डवों के सामने भरी सभामें दुःशासन ने द्रौपदी के वस्त्र और बालोंको पकडकर खींचा, उस समय जिसका कोई दूसरा नाथ नहीं ऐसी द्रौपदी ने रोकर पुकारा– ‘हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!’ ॥१॥

श्रीकृष्ण विष्णो मधुकैटभारे भक्तानुकम्पिन् भगवन् मुरारे ।
त्रायस्व माम् केशव लोकनाथ गोविंद दामोदर माधवेति॥

‘हे श्रीकृष्ण! हे विष्णो! हे मधुकैटभ को मारनेवाले! हे भक्तों के ऊपर अनुकम्पा करनेवाले! हे भगवन्! हे मुरारे! हे केशव! हे लोकेश्वर! हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव! मेरी रक्षा करो, रक्षा करो’ ॥२॥

विक्रेतुकाम अखिल गोपकन्या मुरारी पदार्पित चित्तवृत्त्यः ।
दध्योदकं मोहवसादवोचद् गोविंद दामोदर माधवेति॥

जिनकी चित्तवृत्ति मुरारि के चरणकमलों मे लगी हुई है, वे सभी गोपकन्याएँ दूध-दही बेचने की इच्छा से घरसे चलीं। उनका मन तो मुरारि के पास था; अतः प्रेमवश सुध-बुध भूल जाने के कारण ‘दही लो दही’ इसके स्थानपर जोर-जोरसे ‘गोविन्द! दामोदर! माधव! आदि पुकारने लगीं ॥३॥

जगधोय दत्तो नवनीत पिण्डः गृहे यशोदा विचिकित्सयानि।
उवाच सत्यं वद हे मुरारे गोविंद दामोदर माधवेति॥
जिह्वे रसाग्रे मधुरा प्रिया त्वं सत्यं हितं त्वं परमं वदामि।
अवर्णयेत मधुराक्षराणि गोविंद दामोदर माधवेति॥
गोविंद गोविंद हरे मुरारे गोविंद गोविंद मुकुंद कृष्ण ।
गोविंद गोविंद रथांगपाणे गोविंद दामोदर माधवेति॥
सुखावसाने त्वदिमेव सारं दुःखावसाने त्वदिमेव गेयम् ।
देहावसाने त्वदिमेव जप्यं गोविंद दामोदर माधवेति॥

सुख के अन्त में यही सार है, दुःख के अन्त में यही गाने योग्य है और शरीर का अन्त होने के समय भी यही मन्त्र जपने योग्य है, कौन-सा मन्त्र? यही कि ‘हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव !’ ॥

वक्तुं समर्थोपि निवक्ति कश्चित् अहो जनानां व्यसनाभिमुख्यम् ।
जिह्वे पिबस्वमृतमेतदेव गोविंद दामोदर माधवेति॥